हर्बर्ट साइमन और उसके निर्णय-निर्माण सिद्धांत

TULSA RAM
[Guest faculty, Public Administration, Department, Govt. College, Shiv, Barmer, Rajasthan]

पुस्तके:-

- मॉडल्स ऑफ़ मैन
- कृत्रिम विज्ञान
- एडमिनिस्ट्रेटिव बिहेवियर
- द साइंसेज़ ऑफ़ द आर्टिफ़िशियल
- मॉडल्स ऑफ़ माई लाइफ़
- ऑर्गेनाइज़ेशंस
- ह्यूमन प्रॉब्लम सॉल्विंग
- रीज़न इन ह्यूमन अफ़ेयर्स
- मॉडल्स ऑफ़ बाउंडेड रैशनेलिटी
- मॉडल्स ऑफ़ थॉट, वॉल्यूम 2

पुरस्कार: (1)1978 अर्थशास्त्र का नोबल पुरस्कार निर्णय निर्माण प्रक्रिया शोध के लिए
(2)कंप्यूटर विज्ञान में ए.एम. ट्यूरिंग पुरस्कार उन्होंने यह पुरस्कार 1975 में न्यूवेल के साथ साझा किया था.
(3)1986 में नेशनल मेडल ऑफ़ साइंस से सम्मानित किया गया था.
(4)1993 में अमेरिकन साइकोलॉजिकल एसोसिएशन का लाइफ़टाइम अचीवमेंट पुरस्कार
(5) 1995 में अमेरिकन पॉलिटिकल साइंस एसोसिएशन का ड्वाइट वाल्डो पुरस्कार मिला था.
(6) 1988 में इंस्टीट्यूट फ़ॉर ऑपरेशन्स रिसर्च एंड मैनेजमेंट साइंस वॉन न्यूमैन थ्योरी पुरस्कार

निर्णय-निर्माण सिद्धान्त

सार:-

- निर्णय निर्माण सिद्धांत, मनोवैज्ञानिक पहलुओं को भी ध्यान में रखता है.
- यह सिद्धांत बताता है कि किसी निर्णय के परिणाम निश्चित रूप से ज्ञात नहीं होते, लेकिन संभावनाओं का एक सेट हो सकता है.
- निर्णय सिद्धांत का इस्तेमाल प्रबंधन, परियोजनाओं, सूचना प्रौद्योगिकी, अनुसंधान, कंप्यूटर विज्ञान, चिकित्सा, विपणन, और दर्शन जैसे क्षेत्रों में किया जाता है.
- हर्बर्ट साइमन के निर्णय-निर्माण सिद्धांत के मुताबिक, लोक प्रशासन में निर्णय लेने के तीन मुख्य चरण होते हैं:

#बुद्धिमत्ता

#डिजाइन

#विकल्प

- निर्णय निर्माण, विभिन्न विकल्पों की जांच-पड़ताल के बाद सर्वोत्कृष्ट समाधान पर पहुंचने की प्रक्रिया है.
- निर्णय लेने की प्रक्रिया में मूल रूप से ये चरण शामिल होते हैं:

#समस्या को परिभाषित करना

#समस्या का विश्लेषण करना

#प्रासंगिक जानकारी एकत्रित करना

#वैकल्पिक समाधान विकसित करना

#परिस्थितियों में सर्वोत्तम समाधान का चयन करना

#कार्रवाई पर निर्णय लेना|

मुख्य शब्द:- संगठन , निर्णय-निर्माण, बौद्धिकता, सम्बद्ध तकनीकी, समन्वय, संवेदनात्मक, प्रशासनिक व्यवहार, लक्ष्य, प्रक्रिया|

प्रस्तावना:- संगठन को सफल बनाने के लिए यह आवश्यक होता है कि उसमें निर्णय-निर्माण की प्रक्रिया सही रूप में क्रियान्वित हो। यदि व्यवस्थित रूप में निर्णय-निर्माण प्रतिमान को निर्धारित व सम्पन्न किया जाए तो संगठन या प्रबन्ध की सफलता को बहुत हद तक सुनिश्चित किया जा सकता है। लोक प्रशासन में निर्णय निर्माण प्रतिमान का महत्व कम महत्वपूर्ण नहीं है। लोक प्रशासन के अर्थ को सार्थक करने के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि निर्णय-निर्माण के संदर्भ में वैज्ञानिकता को आधार बनाया जाए। प्रशासन में निर्णय निर्माण सिद्धान्त के प्रतिपादक हर्बर्ट ए. साइमन हैं जिन्होंने सीमित

बौद्धिकता के सिद्धान्त तथा व्यापक बौद्धिकता के सिद्धान्त के अनुपालन पर बल दिया है। हर्बर्ट ए. साइमन का मानना है कि सामान्यतः व्यक्ति एक प्रशासक के रूप में शीघ्र निर्णय लेता है तथा यह प्रवृत्ति मानव में स्वाभाविक होती है। निर्णय-निर्माण में शीघ्रता का परिचय देने से या मानवीय स्वभाव में निहित दोषों के कारण निर्णय समय अनुकूल एवं यथास्वरूप नहीं होता है, जिसका परिणाम होता है- संगठन या प्रशासन की विफलता। हर्बर्ट ए. साइमन ने अपनी सर्वाधिक महत्वपूर्ण रचना 'एडमिनिस्ट्रेटिव बिहेवियर' में प्रशासनिक संगठन के अन्तर्गत निर्णय-निर्माण की प्रक्रिया का विस्तृत विवेचन किया है। अपने इस सिद्धान्त में उन्होंने संगठन से सम्बद्ध तकनीकी पहलुओं पर विचार किया है तथा तार्किक चयन से सिद्धान्त को प्रतिपादित किया है। यहाँ यह भी स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि हर्बर्ट ए. साइमन के अनुसार लोक प्रशासन के अन्तर्गत होने वाले निर्णय, जिसे प्रशासनिक निर्णय कहा जाता है के अन्तर्गत तथ्यों एवं मूल्यों का समन्वय है तथा इस बात पर जोर दिया गया है कि मूल्यों का तथ्यों में परिवर्तन नहीं हो सकता है| | हर्बर्ट ए. साइमन, जिन्हें निर्णय-निर्माण प्रतिमान के एक प्रसिद्ध प्रतिपादक व एक विश्लेषक के रूप जाना जाता है, के सिद्धान्तों में तार्किकता के साथ संवेदनात्मक आयाम भी समाहित है। दूसरे शब्दों में, हर्बर्ट ए. साइमन के मतानुसार निर्णय-निर्माण प्रशासनिक व्यवहार के विभिन्न स्वरूपों का ही एक मनोवैज्ञानिक अध्ययन है; यह निर्णय चक्र में निर्णयकर्ता की अभिचेतना एवं दूरदृष्टि है तथा इसमें मूल्यों एवं तथ्यों दोनों का सम्मिश्रण होता है। साररूप में, निर्णय-निर्माण प्रतिमान में निर्णयकर्ता की भूमिका ही महत्वपूर्ण होती है।

हर्बर्ट ए. साइमन अपने महत्वपूर्ण सिद्धान्त निर्णय-निर्माण प्रतिमान के अन्तर्गत निर्णय लेने हेतु महत्वपूर्ण चरणों को आवश्यक मानते हैं-

✓Human Decision making

✓Problem solving

✓Bounded Rationality

इनका मुख्य लक्ष्य निर्णय निर्धारण में लोगों द्वारा प्रयोग किया गया चिंतन प्रक्रिया की प्रकृति और क्रियाविधि का विश्लेषण करना था। जब उन्होंने 1947 में Administrative Behavior Study of Decision Making Process in Administrative Organization को प्रकाशित करते हैं तो इसमें वे प्रशासन की पारंपरिक अवधारणाओं की आलोचना करते हैं |वह प्रबंधन के पारंपरिक सिद्धांतों की भी आलोचना करते हैं उसे उन्होंने प्रशासन के जो पुराने सिद्धांतों की अवधारणा थी उस पर प्रश्न उठाया तथा कहा कि यह प्रशासन के "मुहावरे हैं। उन्होंने तर्क दिया कि तथाकथित सिद्धांत अक्सर एक-दूसरे के साथ संघर्ष करते रहते हैं तथा वह वैज्ञानिक जांच तक नहीं करते हैं इसीलिए यह जटिल स्थितियों में लागू नहीं होते और और इसीलिए इन्हें सिद्धांत नहीं कहा जा सकता| साइमन ने वैज्ञानिक व्यवहार के लिए तथ्यात्मक प्रस्ताव की वकालत की तथा इनका अधिक जोर तर्कसंगतता पर था जिसने इन्हें तथ्यों और मूल्यों के पृथक्करण पर विश्वास करने के लिए प्रेरित किया और तर्क दिया कि तथ्य अनुभवजन्य है और वैज्ञानिक रूप से सत्यापित हो सकते हैं। उन्होंने प्रशासनिक निर्णय को अधिक तर्कसंगत बनाने के लिए प्रशासन को एक विज्ञान बनाने पर जोर दिया। साइमन ने कहा कि निर्णय लेना प्रशासन का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है और निर्णयों का परिणाम उस प्रक्रिया पर निर्भर करता है जिसका उपयोग निर्णय लेने में किया जाता है अर्थात उन्होंने Bounded Rationality Model को विकसित किया जो इस विचार की वकालत करता है कि मनुष्य केवल आंशिक रूप से तर्कसंगत है।

निर्णय निर्माण प्रक्रिया

साइमन ने निर्णय निर्माण की प्रक्रिया को मुख्य रूप से तीन चरणों में बांटा है:

✓Intelligence Activity बौद्धिक गतिविधि

✓Design Activity प्रारूप गतिविधि

✓Choice Activity विकल्प चयन गतिविधि

1. बौद्धिक गतिविधि

साइमन के अनुसार इस प्रथम चरण में समस्या का पता लगाया जाता है तथा प्रश्नों की तलाश की जाती है। आवश्यक सूचना, आंकड़े, एवं तथ्यों, को एकत्र किया जाता है तथा इसमें निर्णय लेने के अवसरों तथा स्थितियों का पता लगाया जाता है।

2. प्रारूप गतिविधि

साइमन के अनुसार इस चरण में समस्याओं के समाधान हेतु विभिन्न विकल्पों तथा विभिन्न क्रिया विधियों का निर्माण किया जाता है इसमें निर्णय कर्ताओं के मन में मुख्य रूप से आठ प्रकार के विकल्प सामने आते हैं। अतः यह चरण समस्या तथा उसके संभावित विकल्पों के आकलन एवं समाधान के संबंध में सोचने विचारने का है।

3. विकल्प चयन गतिविधि

साइमन के अनुसार इस अंतिम चरण में समस्याओं के समाधान के लिए उपलब्ध विभिन्न विकल्पों व कार्य विधियों में से किसी एक का चयन कर लिया जाता है उस विकल्प को जो सर्वश्रेष्ठ हो।

अतः देखने में यह तीनों चरण साधारण और एक दूसरे के क्रमगत लगते हैं लेकिन व्यवहार में यह बहुत जटिल हैं क्योंकि इनमें से प्रत्येक चरण का निर्णय प्रक्रिया में अपनी अलग भूमिका होती है।

Classical & Neo-Classical Theories vs Bounded Rationality

क्लासिकल और नव क्लासिकल सिद्धांत के अनुसार निर्णय निर्माण का मुख्य लक्ष्य तार्किक होता है अर्थात सबसे पहले समस्या या मुद्दों के जांच के अंतर्गत सभी प्रकार के उससे संबंधित जानकारी व आंकड़ों को एकत्रित किया जाता है

दूसरे चरण में विभिन्न संभावित विकल्पों को उत्पन्न किया जाता है तथा इन विकल्पों के परिणामों की जांच की जाती है तथा अंत में जो इनमें से सबसे सर्वोत्तम विकल्प होता है उसका चयन किया जाता है।

Bounded Rationality यह निर्णय निर्माता की तर्कसंगतता कि धारणा को चुनौती देती है तथा उसकी Cognitive Limitations पर जोर देती है और ऐसी प्रक्रिया द्वारा लिया निर्णय संतोषजनक होगा अर्थात साइमन का Bounded Rationality का सिद्धांत व्यवहार सिद्धांत पर आधारित है।

साइमन के अनुसार चयन करते समय तार्किक होना जरूरी है वह तार्किकता को मूल्य व्यवस्था में प्राथमिकता पूर्ण वैकल्पिक व्यवहार के चयन के रूप में लेते हैं। जिसके व्यावहारिक परिणामों का मूल्यांकन संभव है। साइमन कहते हैं कि किसी भी प्रकार के चयन के लिए उस संबंध में हर तरह का ज्ञान आवश्यक है साथ ही इस चयन के परिणामों का पूर्वानुमान भी आवश्यक है।

Two Types of Decision Making

1.Normative Decision / Programed

2. Descriptive Decision / Unprogrammed

Programed ***(निश्चित निर्णय)***

निश्चित निर्णय से तात्पर्य है कि एक निश्चित कार्यक्रम या उसकी रूपरेखा हमारे दिमाग में है उसको क्रियान्वित करने से उसका समाधान स्वता ही प्राप्त हो जाता है |हर सरकारी नियम या उप नियम एक कार्यक्रम है और उसके क्रियान्वयन से एक निश्चित निर्णय प्राप्त होता है।

उ **उदाहरण** के लिए नियम यह है कि निर्धारित सरते पूर्ण करने वाले आवेदक को लाइसेंस दे दिया जाए ऐसे मामलों में यह निर्णय करते समय कि आवेदक को लाइसेंस दिया जाए या ना दिया जाए हम केवल यह देखते हैं कि उसने निर्धारित करते पूरी की है या नहीं।

*Unprogrammed(**अनियोजित निर्णय**)*

यह निर्णय होते हैं जो नए संरचनाविहीन, परिणामदायक और स्वतंत्र रूप से नियंत्रण संभालने वाले होते हैं क्योंकि उनके लिए पहले से बनी बनाई कोई कार्यपद्धती नहीं होती। ऐसे हर मामले में कार्यकारी अधिकारी को नया निर्णय लेना पड़ता है।

नियोजित निर्णय को लागू करने की तकनीकें- स्वभाव, ज्ञान, तथा कुशलता, और अनौपचारिक संवाद, माध्यम, इत्यादि।

अनियोजित निर्णय को लागू करने के उपाय हैं:- अधिकारियों को चयन और प्रशिक्षण से हासिल उच्च स्तरीय कुशलता तथा उनमें प्रयोगधर्मिता की क्षमता इत्यादि।

निर्णय निर्माण के दो अन्य तत्व

साइमन अपनी रचना Administrative Behavior में दो तत्वों पर प्रमुखता से जोड़ देते हैं:-

1तथ्य

¢ 2. मूल्य

इनके अनुसार निर्णय से तात्पर्य तत्वों और मूल्य तत्वों का उचित योग होता है तथ्य यथार्थ की अभिव्यक्ति हैं जो स्वयं चीजों की मौजूदा स्थिति कृत्य और व्यवहार का सूचक होता है किसी तथ्य पूर्ण आधार वाक्य को पर्यवेक्षण के और मापनीय साधनों से साबित किया जा सकता है।

इसके विपरीत मूल्य से तात्पर्य पसंद से है मूल्य प्राथमिकताओं की अभिव्यक्ति है मूल्यगत आधार वाक्य सिर्फ कुछ स्थितियों में ही वैध माने जा सकते हैं।

साइमन :- "प्रत्येक निर्णय अनेक तथ्यों और एक या अनेक मूल्य वक्तव्य का परिणाम होता है।"

निष्कर्ष:-हर्बर्ट साइमन का निर्णय-निर्माण सिद्धांत व्यावहारिक वास्तविकताओं पर प्रकाश डालता है कि सरकार में काम करने की बाधाओं के साथ वास्तव में कैसे चुनाव किए जाते हैं। यह भविष्यवाणी करता है कि सर्वोत्तम विकल्प चुनने के बजाय, लोक सेवक सरल प्रक्रियाओं का उपयोग करके "काफी अच्छे" विकल्पों की तलाश करेंगे।

संदर्भ ग्रंथ:

1. Prasad, Ravindra D. Etc. al 9eds., 1989 Administrative thinkers:Sterling Publisher New Delhi
2. Avasthi, A., & maheshwari S, 1984 Public Adiministration; Lakshmi Narain Agarwal ; Agra.
3.J.K.jain प्रबंध के सिद्धांत , प्रतीक पब्लिकेशन इलाहाबाद 2002
4. भट्टाचार्य मोहित 1987 public administration the world press private limited Calcutta
5. Avasthi&mahashavari 1984 public administration
6. Prasad& Ravindra D.etc. Al 9eds 1989 Administrative Thinker